mPp ,o fuEu nf'pUrk j[ku okys fd'kkj fo|kfFk;k dh l`tu'khyrk dk ryukRed v/;;u

अंकितकुमार आर. प्रजापति

१. iLrkouk

मानव व्यवहार के क्षेत्र में किशोर वय के विद्यार्थियों का अत्याधिक महत्त्व है। इस अवस्था में बालकों में क्रान्तिकारी शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और संवेगात्मक परिवर्तन होते हैं। इस अवस्था में किशोर अपने मूल्यों, आदर्शों और संवेगों में संघर्ष का अनुभव करता है जिसके फलस्वरूप वह अपने आप को द्वन्द्व की स्थिति में पाता है। उसके मन में कई आकांक्षाएँ जन्म लेती है। जब वह आकांक्षा के अनुरूप फल प्राप्त करता है तो आनन्द की अनुभूति करता है लेकिन यदि उसके प्रगति–पथ में बाधाएँ, रूकावट, परेशानियाँ आती है तो वह तुरन्त टूट जाता है। उस समय यदि उसकी भावनाओं को नहीं समझा गया तो वह पहले उदास और उसके बाद आक्रामक, विद्रोही एवं विद्वेषी बन जाता है। आक्रामकता, अवरोधात्मकता एवं आनन्द व्यक्ति के भावनात्मक पक्ष है। व्यक्ति में नकारात्मक सोच पैदा होती है। यह समस्याओं के समाधान के निमित्त अपने संवेगों का अधिक सृजनात्मक उपयोग करने के लिए प्रेरित करती है। यह एक व्यक्तिगत कुशलता है जो भिन्न–भिन्न व्यक्तियों में भिन्न–भिन्न मात्रा में पाई जाती है। इसकी भिन्न–भिन्न मात्रा व्यक्ति के सकारात्मक सोच तथा सृजनात्मक शक्ति को प्रभावित करती है। क्या संवेगात्मक बुद्धि और सृजनशीलता का दुश्चिताओं से कोई सम्बन्ध हो सकता है, इसे आधार बनाकर प्रस्तुत अध्ययन का लक्ष्य किशोर विद्यार्थियों की दुश्चिन्ताओं का अध्ययन एवं उनका सृजनशीलता एवं संवेगात्मक बुद्धि के साथ सम्बन्धों का अध्ययन करना ळें

२. 'kk/k leL;k dk mnxe

दुश्चिन्ता एक ऐसा भावनात्मक गुण है जो प्रत्येक व्यक्ति में कम या अधिक मात्रा में पाया जाता है। दुश्चिनता भय या आशंका के कारण उत्पन्न होती है। किशोर विद्यार्थियों की सर्वाधिक दुश्चिन्ताएँ जिन बातों को लेकर होती है वे हैं– परीक्षा, अध्यापकों से सम्बन्ध, साथियों से सम्बन्ध, दुर्घटनाओं की आशंकाएँ, अपर्याप्त साधन सुविधाएँ, व्यवसाय–नौकरी, घर, स्वास्थ्य, कुसंगति, असफल होना, अलोकप्रिय होना, दूसरों की भावनाओं को ठेस पहुँचाना, अकेलापन, गलत प्रमाद में पड़ना, पहनावा, विपरीन यौन, मित्र, पाठ्यक्रम वातावरण आदि। दुश्चिन्ताएँ बालक के शारीरिक एवं मानसिक विकास को प्रभावित करती है। इसी सन्दर्भ में शोधकर्ता ने प्रस्तुत शोध कार्य के लिए उच्च एवं निम्न दुश्चिन्ता रखने वाले विद्यार्थियों की सृजनशीलता एवं संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन विषय का चयन किया।

३. 'kk/k e iz;Dr rduhdh 'kCnk dh 0;k[;k

शोध समस्या में निम्नलिखित तकनीकी शब्दों का प्रयोग किया गया है जिन्हें समझना आवश्यक है –

३.१ nf'pUrk

दुश्चिन्ता अथवा चिन्ता का अर्थ एक ऐसी कष्टदायक मानसिक स्थिति से है जिसमें विपत्तियों की आशंका से व्यक्ति व्याकुल होता है। आर में (1950, P 673) ने इसे परिभाषित करते हुए लिखा है–

"भय के संकेत की अनुभूति की कोई मात्रा जो व्यक्ति अपने व्यक्तित्व के अस्तित्व के लिए आवश्यक समझता है, चिन्ता कहलाती है।

३.२ l`tu'khyrk

सृजनशीलता वह योग्यता है जिसके द्वारा नए सम्बन्धों का ज्ञान होता है, इसकी उत्पत्ति में चिन्तन के परम्परागत प्रतिमानों से हटकर असाधारण विचार उत्पन्न होते है। हेविंग हर्स्ट (1961, P. 272) के अनुसार– सृजनशीलता वह गुण है जो नवीन तथा वांछित वस्तु के उत्पादन की ओर आकृष्ट करता है। यह नवीन उत्पादन सम्पूर्ण समाज या केवल सृजनात्मक व्यक्ति के लिए नवीन हो सकता है।

३.३ lkaosfxd cqf)

सांवेगिक बुद्धि व्यक्ति की वह योग्यता एवं कुशलता है जिसके द्वारा वह अपने संवेगों का संतुलन करता है और उनका उपयोग प्रतिदिन के कार्यों को सफलतापूर्वक करने में करता है।

३.४ fd'kksj fo|kFkhZ

किशोरावस्था (Adolescence) जन्मोपरांत मानव विकास की तृतीय अवस्था है जो बाल्यकाल की समाप्ति के उपरान्त प्रारम्भ होती है तथा युवावस्था के प्रारम्भ होने तक चलती है।

४. 'kks/k ds mn~ns';

शोधकर्ता ने प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए निम्नांकित उद्देश्यों का निर्माण किया–

- किशार विद्यार्थियों की दुश्चिन्ताओं का अध्ययन करना।
- उच्च एवं निम्न दुश्चिन्ता रखने वाले किशोर विद्यार्थियों की सृजनशीलता का अध्ययन करना।
- उच्च एवं निम्न दुश्चिन्ता वाले किशोर विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि का अध्ययन करना।
- उच्च दुश्चिन्तावाले छात्र एवं छात्राओं की सृजनशीलता का तुलनात्मक अध्यन करना।
- निम्न दुश्चिन्ता वाले छात्र एवं छात्राओं की सृजनशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- उच्च एवं निम्न दुश्चिन्ता वाले विद्यार्थियों की सृजनशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- उच्च दुश्चिन्ता वाले छात्र एवं छात्राओं की सांवेगिक बुद्धि का तुलनामक अध्ययन करना।
- निम्न दुश्चिन्ता वाले छात्र एवं छात्राओं की सांवेगिक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- उच्च एवं निम्न दुश्चिन्ता वाले विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

५. 'kks/k ifjdYiuk

शोधकर्ता ने निम्नांकित परिकल्पनाओं को अध्ययन से पूर्व निर्धारित कर इन्हें शोधकार्य का आधार बनाया –

- उच्च दुश्चिन्ता रखने वाले छात्र एवं छात्राओं की सृजनशीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
- निम्न दुश्चिन्ता रखने वाले छात्र एवं छात्राओं की सृजनशीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
- उच्च एवं निम्न दुश्चिन्ता रखने वाले विद्यार्थियों की सृजनशीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
- उच्च दुश्चिन्ता वाले छात्र एवं निम्न दुश्चिन्ता वाले छात्रों की सृजनशीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
- उच्च दुश्चिन्ता वाले छात्र एवं निम्न दुश्चिन्ता वाली छात्राओं की सृजशीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
- उच्च दुश्चिन्ता वाली छात्राओं में एवं निम्न दुश्चिन्ता वाले छात्रों की सृजनशीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता हैं
- उच्च एवं निम्न दुश्चिन्ता वाली छात्राओं की सृजशीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
- उच्च दुश्चिन्ता रखने वाले छात्र एवं छात्राओं की सांवेगिक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

- निम्न दुश्चिन्ता रखने वाले छात्र एवं छात्राओं की सांवेगिक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
- उच्च एवं निम्न दुश्चिन्ता रखने वाले विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
- उच्च दुश्चिन्ता वाले छात्र एवं निम्न दुश्चिन्ता वाले छात्रों की सांवेगिक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
- उच्च दुश्चिन्ता वाले छात्र एवं निम्न दुश्चिन्ता वाली छात्राओं की सांवेगिक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
- उच्च दुश्चिन्ता वाली छात्राओं में एवं निम्न दुश्चिन्ता वाले छात्रों की सांवेगिक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता हैं
- उच्च एवं निम्न दुश्चिन्ता वाली छात्राओं की सांवेगिक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

६. 'kks/k fof/k

प्रस्तुत अध्ययन में उच्च एवं निम्न दुश्चिनता रखने वाले विद्यार्थियों की सृजनशीलता एवं सांवेगिक बुद्धि के अध्ययन के लिए तुलनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

७. 'kks/k midj.k

वैज्ञानिक शोधकार्य के अन्तर्गत किसी समस्या के अध्ययन के लिए वैज्ञानिक उपकरण एवं वैज्ञानिक प्रक्रिया का चयन करना पड़ता है। इससे समस्या के निष्कर्ष विश्वसनीय एवं वैध होते है। अनुसन्धानकर्ता द्वारा वैज्ञानिक शोध अध्ययन करने के लिए निम्नांकित उपकरणों का प्रयोग किया गया था।

८. 'kks/k U;kn'kZ

प्रत्येक शोध अध्ययन का एक क्षेत्र होता है जिसे समष्टि कहते हैं। शैक्षिक अध्ययनों में समष्टि से आंकड़े इकट्ठा करना बहुत–बहुत कठिन कार्य होता है। इसलिए समष्टि में से कुछ ऐसे अंशों का चयन किया जाता है जिनमें समष्टि की विशेषताओं का प्रतिनिधित्व होता है, ऐसे अंश को न्यादर्श कहा जाता है। प्रस्तुत शोध में न्यादर्श चयन हेतु, गुजरात राज्य के बनासकांठा जिला के उच्च माध्यमिक कक्षाओं में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को समष्टि के रूप में ग्रहण किया गया है। न्यादर्श हेतु 600 विद्यार्थियों का चयन किया गया। न्यादर्श चयन के लिए 1000 विद्यार्थियों (500 छात्र एवं 500 छात्राओं) पर अभिव्यक्त दुश्चिन्ता प्रमापनी का प्रशासन किया गया। इस उपकरण पर प्राप्त प्राप्तांकों के आधार पर छात्र एवं छात्राओं के प्राप्तांकों को घटते क्रम के अनुसार क्रम दिया गया। इसके पश्चात् 500 छात्रों मेंसे ऊपर के 150 एवं नीचे से 150 छात्रों का चयन किया गया। ऊपर वाले समूह को उच्च दुश्चिन्ता समूह एवं नीचे वाले समूह को निम्न दुश्चिन्ता समूह नाम दिया गया। बीच के 200 छात्रों को छोड़ दिया गया। इसी प्रकार 500 छात्राओं में 300 छात्राओं (150 उच्च दुश्चिन्ता समूह एवं 150 निम्न दुश्चिन्ता) समूह का चयन किया गया।

९. U;kn'kZ iz:i

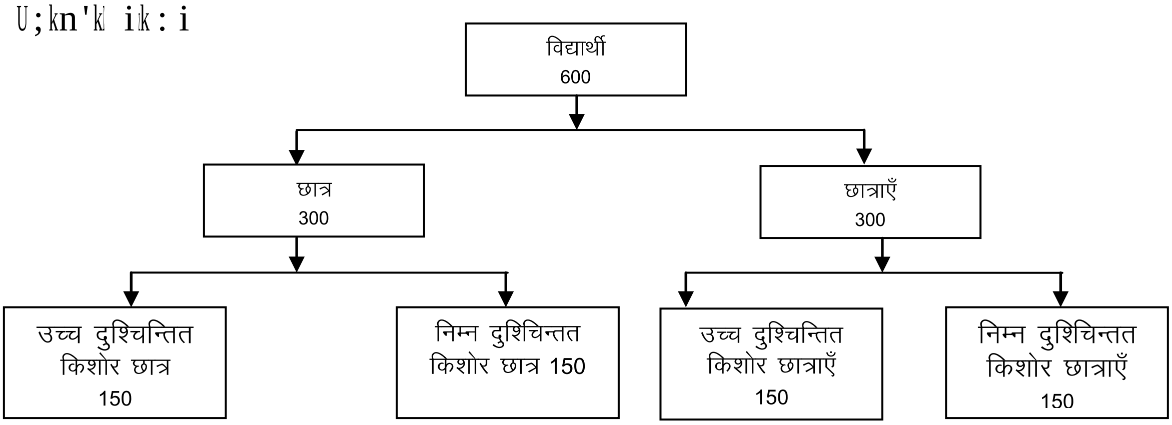

१०. 'kk/k e i;Dr lkf[;dh

शोधकर्ता द्वारा संकलित किए गए आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या करने के लिए प्रस्तुत शोध में निम्नलिखित सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया था।

1- मध्यमान
2- मानक विचलन
3- t- अनुपात
4- t= टेस्ट

इसके लिए परिकल्पनाओं का परीक्षण कर उन्हें स्वीकृत या अस्वीकृत किया गया था।

११. v/;;u ifjlheu

समय एवं धन की सीमा को दृष्टि में रखते हुए प्रस्तुत शोध अध्ययन के क्षेत्र को निम्नानुसार परिसीमित किया गया था।

1. प्रस्तुत अध्ययन गुजरात राज्य के बनासकांठा जिले तक सीमित था।
2. प्रस्तुत अध्ययन में 15–17 वर्ष एवं उच्च माधयिमक कक्षाओं (XI और XII) में अध्ययनरत विद्यार्थियों को ही सम्मिलित किया गया था।
3. प्रस्तुत अध्ययन हेतु गुजरात राज्य शिक्षण बोर्ड का पाठ्यक्रम संचालित करने वाले उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों का ही चयन किया गया था।
4. प्रस्तुत अध्ययन हेतु चयनित विद्यार्थियों की दुश्चिन्ता, सृजनशीलता और सांवेगिक बुद्धि को ही चर के रूप में सम्मिलित किया गया था।
5. प्रस्तुत शोध के निष्कर्ष, शोध में प्रयुक्त समष्टि पर ही लागू होंगें।

१२. lkjk'k

प्रस्तुत अध्याय में सर्वप्रथम प्रस्तुत शोध की आवश्यकता एवं इससे सम्बन्धित कार्यों की विवेचना को प्रस्तुत किया गया था। और इस विवेचन के आधर पर शोध समस्या का आंकलन किया गया था।। तत्पश्चात् शोध समस्या में प्रयुक्त तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण प्रस्तुत किया गया। इसके पश्चात् शोध के उद्देश्य एवं तत्सम्बन्धी परिकल्पनाओं को प्रस्तुत किया गया। परिकल्पनाओं का निर्माण शून्य परिकल्पना के आधार पर किया गया। इसके बाद प्रस्तुत अध्ययन का परिसीमन किया गया। प्रस्तुत शोध शिक्षकों, शिक्षार्थियों, अभिभावकों, नीतिनिर्धारकों, निर्देशन एवं अनुसन्धान की दृष्टि से किस तरह औचित्यपूर्ण है इसका उल्लेख किया गया। इसके पश्चात् शोध विधि, शोध उपकरण न्यादर्श चयन विधि शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी एवं संपूर्ण अध्ययन की कार्य योजना प्रस्तुत की गई है।

lUnHk xUFk

1. Albert, R. S.; Runco, M. A. (1999). A History of Research on Creativity. In Sternberg, R. J. Handbook of Creativity. Cambridge University Press.
2. Cropley, David H.; Cropley, Arthur J.; Kaufman, James C. et al., eds. (2010). The Dark Side of Creativity. Cambridge: Cambridge University Press. ISBN 978-0-521-13960-1. Lay summary (24 November 2010).
3. Plato, The Republic, Book X - wiki source: The Republic/Book X
4. Robinson, Andrew (2010). Sudden Genius?: The Gradual Path to Creative Breakthroughs. Oxford: Oxford University Press. ISBN 978-0-19-956995-3. Lay summary (24 November 2010).